Raga of the Month October 2021 Sorathangake Raga

सोरठ अंग के राग

थाट पद्धति के अनुसार राग सोरठ खमाज थाट के अंतर्गत आता है। खमाज रागांग के रागों में गंधार प्रबल होता है। खमाज थाट के जिन रागों में रिषभ प्रबल होता है, वे सोरठ अंग के राग माने जाते हैं। सोरठ राग में गंधार का प्रयोग केवल अवरोहमें अप्रत्यक्ष रूप से मध्यम और रिषभ की मींडमें होता है। परंतु देस राग में गंधार का प्रयोग अवरोहमें हमेशा होता है। आजकल सोरठ राग की तुलना में देस राग के गायन वादन का प्रचार बढ़ गया है।

हम पहले सोरठ रागकी विशेषताएं देखते हैं :

सा, रे ऩि सा, रे म प, रे प म->रे, नि ध म->रे, रे म प नि सां , म प नि नि सां , प नि सां रें नि ध प , सां नि ध प, प ध म->रे , प म->रे , रे ऩि सा.

अब देस राग के विशेष स्वरप्रयोग देखते हैं।

सा, ऩि सा, रे म ग रे, ग ऩि सा, रे म प , ध म ग रे, म प नि ध प, ध म ग रे, रे ग सा; म प नि नि सां , रें नि ध प, ध म ग रे , नि प ध प म प ध म ग रे, रे प म ग रे, ग रे ऩि सा.

यद्यपि गंधार और धैवत देस राग के आरोह में वर्जित है, कई गुणीजन इनका प्रयोग अल्प मात्रा में आरोह में करते हैं।

सोरठ अंग के रागों में निम्नलिखित रागों का समावेश होता है।

सोरठ, देस, तिलककामोद, सावन (देस अंग), नारायणी, जयजयवंती, गोरख कल्याण, खोकर.

यहाँ एक बात पर ध्यान देना जरुरी है कि , उपरनिर्देशित सभी रागोंमे सोरठ रागकी विशेष स्वर संगतियोंका प्रयोग नहीं होता है। मगर, उन सभी रागोंमे (गंधारकी तुलनामें) रिषभका प्राधान्य रहता है। इसी कारणसे खमाज थाटके रागोंमे गंधार प्रधान (खमाज अंगके राग) और रिषभ प्रधान (सोरठ अंगके राग) ऐसा वर्गीकरण किया जाता है।

आज के ऑडियो में हम **पंडित गिंडेजी** से राग सोरठका विवरण, राग सोरठमे आचार्य रातंजनकर रचित होरी धमार, राग देसकी एक वैशिष्ट्यपूर्ण बंदिश जिसमे कोमल गंधार का अल्प मात्रामे प्रयोग किया है वह सुनेंगे और अन्तमे राग जयजयवंतीमे एक बंदिश सुनेंगे।

आभार- "रागांग राग विवेचन "- पंडित यशवंत महाले , श्री अजय गिंडे.

१८ -१० -२०२१

Link to the list of 120+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx